॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-७

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके पत्रामृत

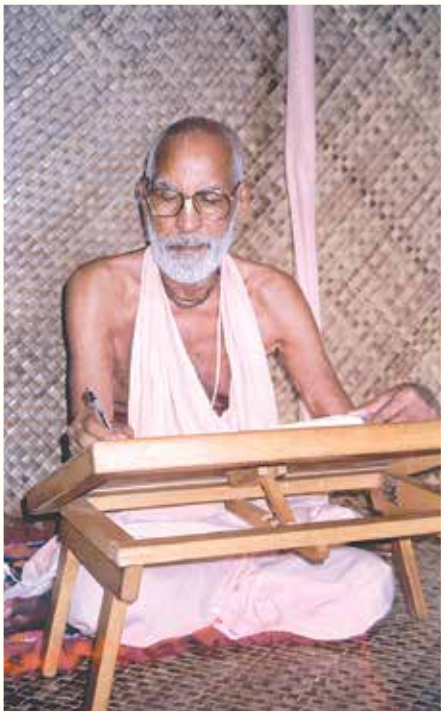

तुम्हारा जीवन भार न होकर सर्वप्रकारसे सुखमय एवं सार्थक हो

(पत्र—५)

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
पो. मथुरा (उ. प्र.)
ता. २/२/८६

स्नेहभाजनीया बेटी मधु!

मेरा स्नेहाशीष ग्रहण करना। तुम्हारा स्नेहसिक्त भावपूर्ण पत्र पढ़कर गद्‌गद् हो गया। आँखें छलछला आयीं। तुम्हारी अन्तर-वेदनाकी आँचने मेरे हृदयको भी तरल कर दिया।

बेटी! तुम्हारे प्रिय सदैव तेरे निकट अति समीप ही हैं। तेरे आत्मीय-स्वजन तुमसे कदापि दूर नहीं हैं, न कभी दूर हो सकते हैं। तुम पगली न बनो। तुम सदैव

युगल किशोर-किशोरीका स्मरण करना। वे कभी भी अपने निजजनोंको भूलते नहीं हैं। जबतक उसे अपने प्रेमके अनुरूप नहीं बना लेते, उसके सारे अनर्थोंको दूर नहीं कर देते, तबतक कुछ छुपेसे रहते हैं। उसे विरहकी अग्निसे तपाते रहते हैं। इस प्रीतिके उच्च सिद्धान्तको जगत्‌में प्रकाशित करनेके लिये ही श्रीकृष्णके बाह्यतः व्रज और व्रज-स्थित गो-गोवत्स, गोप एवं गोपियोंको छोड़कर मथुरा-द्वारका जाने पर भी उनका हृदय कभी भी व्रजसे बाहर नहीं गया। उद्धव जैसे कृष्णके निजजन भी प्रेमके इस निगूढ़ भावको केवलमात्र आंशिक रूपसे ही समझ सके थे।

रही मेरी बात, तो मैं तुम्हें भला कैसे भूल सकता हूँ अथवा तुमसे दूर कैसे रह सकता हूँ। सर्वदा तुम्हारा स्मरण बना रहता है। मेरे गुरुवर्ग एवं श्रीललिता-विशाखा और श्रीरूपमञ्जरी आदि तुम्हारे प्रति अहैतुकी कृपा करें। तुम उनकी कृपासे श्रीमद्भागवतके निगूढ़ एवं श्रीनारद आदि प्रेमी भक्तोंके लिये भी परम-दुर्लभ गोपी-प्रेम एवं श्रीराधा-दास्यसे अभिषिक्त होओ। तुम दुःखी मत होना। तुम्हारा मनोबल वज्रकी भाँति सुदृढ़ हो। जीवन भार न होकर सर्वप्रकारसे सुखमय एवं सार्थक हो। मनुष्य जन्म तो देवताओंके लिये स्पृहणीय है। उसे पाकर उसे सार्थक बनाना हमारा लक्ष्य होना चाहिये। आशा है तुमको कुछ सान्त्वना मिलेगी। यदि ऐसा हो सका तो आनन्दकी बात होगी।

'अखिल भारतीय खण्डेलवाल महासभा'ने तुम्हारे शोध ग्रन्थ पर तुम्हें ताम्र-पत्र एवं शॉल भेंट देनेकी घोषणाकी है—जानकर प्रसन्नता हुई। साथ ही तुम्हें 'खण्डेलवाल महिला जागृति'का सेक्रेटरी चुना गया है—यह भी आनन्दकी बात है। यदि महिलाओंके हृदयमें भागवद्-भक्तिका—कृष्णप्रेमका विशुद्ध बीज रोपण कर सको तो उनका यथार्थ कल्याण कर सकती हो। इसके लिये प्रयास करना। सामाजिक कुसंस्कारोंसे, सामाजिक उत्पीड़नसे उठकर महिलाएँ दया, परोपकार, सत्पंथपरता, वात्सल्य-भाव आदि भारतीय प्राचीन संस्कृतिके अनुरूप सद्गुणोंसे विभूषित होकर सीता, सावित्री, द्रोपदीके समान बन सकें—ऐसा प्रयास कर सको तो अच्छा है।

आज कुछ महिलाएँ एवं पुरुष पश्चिमी संस्कृतिसे प्रभावित होकर प्रतिशोधकी भावनासे एक दूसरेके विरुद्ध प्रतिद्वन्द्वी दलके समान कलह करते हैं। पुरुषों और महिलाओंको प्रीतिके सूत्रमें बाँधनेका प्रयास करके उन-दोनोंमें भक्तिभाव लानेकी चेष्टा ही सर्वोत्तम है।

बहुत कुछ लिख गया। हम लोग मठवासी भगवत्कृपासे कुशल हैं। मथुरामें विशालरूपमें श्रीचैतन्य महाप्रभुका पञ्चशती समारोह आयोजन होने जा रहा है। निमन्त्रण पत्र छपने पर भेजूँगा।

तुम्हारा नित्यमङ्गलाकाङ्क्षी
—श्रीभक्तिवेदान्त नारायण

—सम्पादकीय निवेदनः श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाके सहृद पाठकोंसे विनम्र निवेदन है कि यदि आपमें-से किसीके पास श्रील गुरुदेव—श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके द्वारा हिन्दी अथवा बङ्गला भाषामें लिखित पत्र हैं, तो कृपया उस पत्र// पत्रों को scan करवाकर अथवा उनकी स्पष्ट photo लेकर bhagavata.patrika@gmail.com पर e-mail करें या ७८९५९३९३१६ no. पर whatsapp करें। हम श्रील गुरुदेवके द्वारा आपको भेजे गए पत्रोंको श्रीश्रीभागवत-पत्रिकामें क्रमशः प्रकाशित करेंगे।

https://www.facebook.com/srisribhagavatpatrika

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोंको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति - श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली